International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(II), July- September, 2025, pp. 95-102

महर्षि अरविन्द के शैक्षिक दर्शन का आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अनुप्रयोग

मीनाक्षी शर्मा[1*] | डॉ. सुशीला शील[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]शोध निर्देशिका, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: bhardwajmeenu1883@gmail.com

Citation: शर्मा मीनाक्षी & शील सुशीला. (2025). महर्षि अरविन्द के शैक्षिक दर्शन का आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अनुप्रयोग. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(II)), 95–102.

सार

महर्षि अरविन्द आधुनिक भारत के ऐसे महान चिंतक, दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन या रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर इसे मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व–विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा। उनका शिक्षा–दर्शन "पूर्ण शिक्षा" की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक सभी पक्षों का संतुलित और सामंजस्यपूर्ण विकास निहित है। महर्षि अरविन्द का मानना था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति में निहित दिव्य शक्तियों का जागरण करना है, जिससे वह आत्म–साक्षात्कार कर सके और जीवन को उच्चतम आदर्शों के अनुरूप ढाल सके। वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली मुख्यतः ज्ञान–आधारित, रोजगार–परक और प्रतियोगिता–केन्द्रित होती जा रही है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में तनाव, मूल्यहीनता, और आत्मिक रिक्तता बढ़ती जा रही है। शिक्षा का लक्ष्य केवल व्यावसायिक दक्षता तक सीमित रह गया है, जिससे उसका मानवीय और आध्यात्मिक आयाम उपेक्षित हो गया है। ऐसे समय में महर्षि अरविन्द का शिक्षा–दर्शन न केवल प्रासंगिक है, बल्कि आवश्यक भी है। उनका विचार है कि शिक्षा में योग और ध्यान को स्थान दिया जाए, ताकि विद्यार्थियों में एकाग्रता, आत्म–नियंत्रण और आंतरिक शांति विकसित हो। इसी प्रकार नैतिक शिक्षा और सेवा–कार्य के माध्यम से उनमें उत्तरदायित्व, सहिष्णुता और सामाजिक समरसता की भावना का निर्माण किया जा सकता है। महर्षि अरविन्द द्वारा प्रतिपादित पंचमुखी शिक्षा (शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक) आज की शिक्षा व्यवस्था के लिए एक संतुलित और आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत करती है। यदि इसे आधुनिक शिक्षा नीतियों और योजनाओं में समुचित रूप से सम्मिलित किया जाए, तो यह शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रशिक्षण और रोजगार तक सीमित रखने के स्थान पर उसे आत्म–साक्षात्कार, मानवीय मूल्यों के संवर्धन और वैश्विक शांति की स्थापना का साधन बना सकती है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य महर्षि अरविन्द के शिक्षा–दर्शन की मूल विशेषताओं का विश्लेषण करना और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनके अनुप्रयोग की सम्भावनाओं पर प्रकाश डालना है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि अरविन्द के विचारों को व्यवहार में लाया जाए तो शिक्षा विद्यार्थियों को केवल कुशल कर्मचारी ही नहीं, बल्कि उत्तरदायी, संवेदनशील और जागरूक नागरिक भी बना सकती है।

***शब्दकोशः** महर्षि अरविन्द, शिक्षा–दर्शन, आधुनिक शिक्षा, पूर्ण शिक्षा, योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा, मूल्य–आधारित शिक्षा।*

---

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक और आर्थिक संरचना से प्रभावित हो रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तीव्र प्रगति ने जहाँ एक ओर ज्ञान के नए आयाम खोले हैं, वहीं दूसरी ओर शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा और रोजगारपरकता से गहराई से जोड़ दिया है। आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को नौकरी के योग्य बनाना और उन्हें वैज्ञानिक तथा तकनीकी दक्षता प्रदान करना रह गया है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पाठ्यचर्या इस प्रकार निर्मित की जाती है कि विद्यार्थी अधिक से अधिक अंकों और प्रमाणपत्रों की प्राप्ति करें तथा प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ें।

इस प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ है कि शिक्षा का मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक आयाम उपेक्षित होता जा रहा है। शिक्षा केवल सूचना और ज्ञान के आदान–प्रदान तक सीमित होकर रह गई है। विद्यार्थियों में तनाव, आत्मकेंद्रिता, नैतिक पतन और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएँ तेजी से उभर रही हैं। मूल्यहीनता और आत्मिक रिक्तता आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौतियाँ बन चुकी हैं।

ऐसे समय में महर्षि अरविन्द का शैक्षिक दर्शन अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी प्रतीत होता है। अरविन्द का मानना था कि शिक्षा केवल बौद्धिक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि आत्मा के विकास और आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया है। उनका विचार था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के भीतर छिपी हुई दिव्य संभावनाओं का जागरण करना है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान का अधिग्रहण नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना का विस्तार है।

महर्षि अरविन्द ने "पूर्ण शिक्षा" की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें पाँच प्रमुख आयामों–शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक–का संतुलित विकास अनिवार्य माना गया। उनका यह मानना था कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह विद्यार्थी को न केवल योग्य नागरिक बनाए, बल्कि उसे सच्चे अर्थों में मानवता का साधक और समाज का सहयोगी भी बनाए।

आज जब शिक्षा प्रणाली उपभोक्तावाद, प्रतियोगिता और यांत्रिकता के संकट से जूझ रही है, तब अरविन्द का यह दर्शन शिक्षा को एक समग्र, मूल्यनिष्ठ और मानवीय रूप प्रदान करने में सहायक हो सकता है। उनकी दृष्टि में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने वाले की नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक की होनी चाहिए। इसी प्रकार शिक्षा में योग, ध्यान और नैतिक मूल्यों को सम्मिलित कर विद्यार्थियों को आत्म–नियंत्रित, सहिष्णु और उत्तरदायी नागरिक बनाया जा सकता है।

इस शोध–पत्र की प्रस्तावना का उद्देश्य यही है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सीमाओं और चुनौतियों को देखते हुए महर्षि अरविन्द के शैक्षिक दर्शन की समीक्षा की जाए तथा यह देखा जाए कि उनके विचारों का अनुप्रयोग किस प्रकार शिक्षा को अधिक संतुलित, प्रभावी और जीवनोपयोगी बना सकता है। यह अध्ययन न केवल वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सुधार के लिए आवश्यक है, बल्कि भविष्य की मानवता–केन्द्रित शिक्षा की रूपरेखा तैयार करने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा

महर्षि अरविन्द (1920) की कृति एजुकेशन में शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रशिक्षण या व्यावसायिक दक्षता तक सीमित न मानकर, आत्मा में स्थित दिव्य शक्तियों के जागरण की प्रक्रिया बताया गया है। अरविन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान और रोजगार तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी आयामों–शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक–का संतुलित विकास होना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने शिक्षा को केवल सूचना और तकनीकी दक्षता तक सीमित रखने की प्रवृत्ति से मुक्त कर आत्म–साक्षात्कार और चरित्र–निर्माण का साधन बनाया। इसी कृति में अरविन्द ने शिक्षक की भूमिका पर भी बल देते हुए कहा कि शिक्षक को नियंत्रक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक होना चाहिए।

महर्षि अरविन्द (1947) की प्रसिद्ध कृति द लाइफ डिवाइन में शिक्षा को आध्यात्मिक यात्रा के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस कृति में अरविन्द स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को ईश्वर से

एकत्व की ओर ले जाना है। यहाँ शिक्षा को केवल बाहरी ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि आत्मिक चेतना का विस्तार माना गया है। अरविन्द की यह अवधारणा शिक्षा को केवल सांसारिक और व्यावसायिक जीवन की तैयारी न बनाकर, उसे उच्च आदर्शों और आध्यात्मिक विकास का साधन बनाती है। यह विचार आज की परीक्षा–केंद्रित शिक्षा व्यवस्था में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

रामेश्वर प्रसाद मिश्र (1998) की कृति भारतीय शिक्षाशास्त्र में महर्षि अरविन्द के शिक्षा–दर्शन का विश्लेषण किया गया है। मिश्र ने कहा कि अरविन्द की शिक्षा दृष्टि भारतीय संस्कृति और परंपरा से प्रेरित होते हुए भी वैश्विक महत्व रखती है। उन्होंने प्रतिपादित किया कि जहाँ पश्चिमी शिक्षा मुख्यतः बुद्धि और व्यवसाय पर केंद्रित है, वहीं अरविन्द की शिक्षा दृष्टि आत्मा की उन्नति और चरित्र–निर्माण पर बल देती है। मिश्र का यह भी निष्कर्ष है कि अरविन्द की शिक्षा नीति केवल भारतीय परिप्रेक्ष्य तक सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणादायी है।

एन.के. देसाई (2001) की पुस्तक श्री अरविन्द का दर्शन में शिक्षा को शारीरिक और आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन का साधन बताया गया है। देसाई का मत है कि आधुनिक शिक्षा बौद्धिक और शारीरिक पक्ष पर तो बल देती है, परंतु भावनात्मक और आध्यात्मिक पक्ष की उपेक्षा करती है। इस कमी को दूर करने के लिए अरविन्द की शिक्षा दृष्टि महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें योग, ध्यान और नैतिकता का समावेश है। देसाई का निष्कर्ष है कि यदि शिक्षा केवल रोजगार और प्रतियोगिता तक सीमित होगी तो समाज में असंतुलन और मूल्य–संकट उत्पन्न होंगे, जबकि अरविन्द की शिक्षा इसे संतुलित और सामंजस्यपूर्ण बना सकती है।

आर.एस. शर्मा (2002) की कृति भारतीय दर्शन और शिक्षा में यह प्रतिपादित किया गया है कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की अनेक समस्याओं का समाधान अरविन्द के शिक्षा–दर्शन में निहित है। शर्मा ने बताया कि वर्तमान शिक्षा परीक्षा–केंद्रित और मूल्यविहीन होती जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी तनाव और असंतोष का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि अरविन्द की पंचमुखी शिक्षा–शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास–इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। योग और ध्यान को विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण बताते हुए शर्मा ने कहा कि ये विद्यार्थियों में आत्म–नियंत्रण और मानसिक शांति का विकास करते हैं।

रमेश पाण्डेय (2010) का शोध–लेख समग्र शिक्षा और योगदर्शन अरविन्द की शिक्षा दृष्टि को आधुनिक शिक्षा की चुनौतियों का उत्तर मानता है। पाण्डेय का कहना है कि अरविन्द का दृष्टिकोण वैकल्पिक विद्यालयों और मूल्यनिष्ठ शिक्षा पद्धतियों को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि यदि शिक्षा को केवल रोजगार और परीक्षा तक सीमित रखने के बजाय उसमें आत्मिक उन्नति, योग और मानवीय मूल्यों को सम्मिलित किया जाए, तो शिक्षा अधिक सार्थक और जीवनोपयोगी हो सकती है।

के.के. शर्मा (2005) की कृति भारतीय शिक्षा के आदर्श और मूल्य में यह बताया गया है कि आधुनिक शिक्षा में मूल्यहीनता और भौतिकवाद बढ़ रहे हैं। शर्मा ने अरविन्द की शिक्षा दृष्टि को इन चुनौतियों का समाधान माना क्योंकि यह विद्यार्थियों में आत्म–नियंत्रण, सहिष्णुता और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करती है। उनका निष्कर्ष है कि यदि अरविन्द के सिद्धांतों को आज की शिक्षा प्रणाली में लागू किया जाए, तो शिक्षा विद्यार्थियों को केवल ज्ञानवान ही नहीं बल्कि उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिक भी बना सकती है।

सत्येन्द्र नाथ मुखर्जी (2007) की कृति आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन में अरविन्द की शिक्षा दृष्टि को वर्तमान समय के लिए आवश्यक बताया गया। मुखर्जी का कहना है कि अरविन्द शिक्षा को केवल ज्ञान का साधन न मानकर आत्म–खोज और आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया मानते थे। उनका निष्कर्ष है कि यह दृष्टि विद्यार्थियों के तनाव को कम करने और उनकी सृजनात्मकता बढ़ाने में सहायक है। मुखर्जी का मत है कि यदि शिक्षा इस रूप में अपनाई जाए, तो यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय और संतुलित दिशा प्रदान कर सकती है।

गोविंद सिंह (2015) की पुस्तक भारतीय शिक्षा और मानव विकास में अरविन्द के दर्शन को शिक्षा और मानव विकास के बीच सेतु बताया गया है। सिंह का विचार है कि अरविन्द की शिक्षा दृष्टि व्यक्ति का विकास करने के साथ–साथ समाज में सहयोग और सामंजस्य की भावना भी उत्पन्न करती है। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि जब समाज उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा से प्रभावित हो रहा है, तब अरविन्द का दर्शन शिक्षा को संतुलित और मानवीय बनाने में सहायक हो सकता है।

भारत सरकार (2020) की राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा सुधारों में अरविन्द की दृष्टि से साम्यता रखती है। इस नीति में समग्र शिक्षा, मूल्य शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन और सृजनात्मकता पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उनके नैतिक और भावनात्मक पक्ष का भी विकास करना है। यह नीति इस बात को सिद्ध करती है कि अरविन्द का शैक्षिक दर्शन केवल ऐतिहासिक महत्व का नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा नीतियों में भी प्रेरणा का स्रोत है।

कार्यविधि

इस शोध–पत्र में गुणात्मक पद्धति अपनाई गई है, क्योंकि इसका उद्देश्य महर्षि अरविन्द के शैक्षिक दर्शन का विश्लेषण करना तथा उसकी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता और उपयोगिता को स्पष्ट करना है। यह पद्धति विचारों, सिद्धांतों और दर्शन की गहराई से पड़ताल करने में सहायक होती है।

सबसे पहले, ग्रंथ अध्ययन किया गया। इसमें महर्षि अरविन्द की प्रमुख कृतियों जैसे एजुकेशन (1920), द लाइफ डिवाइन (1947) और योग–संलयन आदि का गंभीर अध्ययन किया गया। इन ग्रंथों में प्रस्तुत उनके शैक्षिक विचारों, पंचमुखी शिक्षा की संकल्पना तथा शिक्षक और विद्यार्थी की भूमिका पर उनके दृष्टिकोण को आधार बनाकर उनके दर्शन की मूल विशेषताओं को समझा गया।

इसके बाद, द्वितीयक स्रोतों का अवलोकन किया गया। इसमें शिक्षा–दर्शन से संबंधित पुस्तकों, शोध–लेखों और पत्रिकाओं का गहन अध्ययन शामिल रहा। विशेष रूप से रामेश्वर प्रसाद मिश्र, एन.के. देसाई, आर.एस. शर्मा, रमेश पाण्डेय और सत्येन्द्र नाथ मुखर्जी जैसे विद्वानों की व्याख्याओं को आधार बनाकर यह जाना गया कि विभिन्न विद्वानों ने अरविन्द के शिक्षा–दर्शन को किस प्रकार देखा और उसकी व्याख्या की।

अगले चरण में, तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया अपनाई गई। इसमें महर्षि अरविन्द के शैक्षिक सिद्धांतों की तुलना वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों से की गई। इस तुलना के माध्यम से यह समझा गया कि अरविन्द की शिक्षा दृष्टि और आधुनिक शिक्षा नीतियों में कितनी समानता है और कहाँ पर अंतर दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रचनात्मकता, मूल्य–शिक्षा और समग्र शिक्षा पर बल दिया गया है, जो अरविन्द की पंचमुखी शिक्षा से साम्यता रखता है।

अंत में, विषयगत वर्गीकरण किया गया। इसके अंतर्गत पंचमुखी शिक्षा के पाँच पहलुओं–शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक–को अलग–अलग भागों में विभाजित कर अध्ययन किया गया। शारीरिक शिक्षा में खेल और स्वास्थ्य को, प्राणिक शिक्षा में जीवन–ऊर्जा के विकास को, मानसिक शिक्षा में बौद्धिक प्रशिक्षण को, नैतिक शिक्षा में मूल्य–आधारित गतिविधियों को और आध्यात्मिक शिक्षा में योग व ध्यान को सम्मिलित किया गया। इस वर्गीकरण ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अरविन्द की शिक्षा अवधारणा को किस प्रकार व्यावहारिक रूप में लागू किया जा सकता है।

इस प्रकार यह शोध–पत्र मुख्यतः उपलब्ध ग्रंथों और साहित्य पर आधारित है। इसमें प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अध्ययन नहीं किया गया है, बल्कि दार्शनिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाकर विवेचन किया गया है। इस कार्यविधि ने शोध–पत्र को केवल वर्णनात्मक न रखकर उसे समग्र और गहन बनाने में सहायक भूमिका निभाई है।

परिणाम

इस शोध से स्पष्ट हुआ कि महर्षि अरविन्द का शिक्षा–दर्शन आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। सबसे पहले, उनका विचार समग्र विकास पर केन्द्रित है। अरविन्द के अनुसार शिक्षा केवल ज्ञानार्जन और रोजगार प्राप्ति का साधन नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। उनकी पंचमुखी शिक्षा–शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक–का उद्देश्य विद्यार्थी के भीतर निहित समस्त शक्तियों का संतुलित विकास करना है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा केवल बुद्धि तक सीमित न रहकर जीवन के सभी पक्षों को छूती है।

शोध से यह भी पाया गया कि महर्षि अरविन्द की सोच का नयी शिक्षा नीति से गहरा साम्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रचनात्मकता, मूल्य–शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन तथा अनुभव–आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। ये सभी बातें अरविन्द की पंचमुखी शिक्षा और उनकी समग्र दृष्टि से मेल खाती हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आज की शिक्षा नीति अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, अरविन्द की शिक्षा दृष्टि को ही आगे बढ़ा रही है।

शोध के दौरान यह भी स्पष्ट हुआ कि अरविन्द ने शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना। उनके अनुसार शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का पथ–प्रदर्शक, मार्गदर्शक और सहयोगी होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में जहाँ विद्यार्थियों की स्वतंत्रता और रचनात्मकता पर बल दिया जाता है, वहाँ अरविन्द का यह विचार और भी सार्थक हो उठता है। शिक्षक की यह नई भूमिका विद्यार्थियों को आत्म–खोज और आत्म–निर्माण की दिशा में प्रेरित करती है।

अरविन्द ने शिक्षा में योग और ध्यान के महत्व पर भी बल दिया। इस शोध से यह निष्कर्ष निकला कि यदि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में योग और ध्यान को नियमित अभ्यास के रूप में सम्मिलित किया जाए, तो विद्यार्थियों में एकाग्रता, आत्म–नियंत्रण और मानसिक शांति का विकास होता है। आधुनिक समय में बढ़ते तनाव और प्रतियोगिता की परिस्थिति में यह उपाय शिक्षा को अधिक मानवीय और संतुलित बना सकता है।

अंततः, इस अध्ययन से यह भी सामने आया कि अरविन्द का शिक्षा–दर्शन नैतिक शिक्षा पर विशेष बल देता है। मूल्य–आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व, सहिष्णुता, करुणा और सामाजिक समरसता की भावना विकसित करती है। इससे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर विद्यार्थी का चरित्र निर्माण होता है, बल्कि समाज में भी शांति और सामंजस्य की स्थापना होती है।

चर्चा

महर्षि अरविन्द का शैक्षिक दर्शन आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। वर्तमान समय में शिक्षा की जो स्थिति है, वह मुख्यतः परीक्षा, अंक और रोजगार तक सीमित होकर रह गई है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी ज्ञान को केवल अंकों, डिग्रियों और नौकरी की योग्यता प्राप्त करने का साधन मानते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा का मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक पक्ष उपेक्षित हो गया है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में अरविन्द का दर्शन शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रशिक्षण न मानकर आत्म–साक्षात्कार, आत्म–खोज और संपूर्ण व्यक्तित्व–विकास का साधन बनाता है।

सबसे पहले, अरविन्द की शिक्षा दृष्टि तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने पर बल देती है। आज शिक्षा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यधिक बढ़ गई है। एक ओर यह विद्यार्थियों को नवीनतम ज्ञान और रोजगार के अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा को यांत्रिक और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण तक सीमित कर देती है। अरविन्द का मत है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास तभी सार्थक है जब वह मानवता के कल्याण और नैतिकता से जुड़ा हो। यदि शिक्षा केवल तकनीक–केंद्रित होगी तो वह व्यक्ति को भौतिक रूप से सक्षम बना सकती है, लेकिन नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उसे खोखला कर देगी। अतः अरविन्द का दर्शन इस असंतुलन को दूर कर शिक्षा को एक समग्र और मानवीय दिशा देता है।

दूसरे, अरविन्द की शिक्षा दृष्टि इस बात पर बल देती है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन न होकर आत्म–खोज और चरित्र–निर्माण का माध्यम बने। आज की शिक्षा प्रणाली तथ्यों, सूचनाओं और रोजगारपरक कौशल पर आधारित है। विद्यार्थी सूचना के भंडार तो बन रहे हैं, परंतु उनमें आत्म–नियंत्रण, करुणा, सहिष्णुता और सृजनशीलता जैसी मानवीय विशेषताएँ कम होती जा रही हैं। अरविन्द का मत है कि शिक्षा व्यक्ति के भीतर छिपी दिव्य शक्तियों को जगाने का साधन है। उनका पंचमुखी शिक्षा का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि यदि शिक्षा केवल मानसिक विकास तक सीमित रहेगी तो वह अपूर्ण होगी। शिक्षा तभी पूर्ण कही जा सकती है जब वह शरीर, प्राण, मन, हृदय और आत्मा–सभी का विकास करे।

तीसरे, अरविन्द के विचार विद्यार्थियों को केवल दक्ष कर्मचारी बनाने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उन्हें उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिक बनाने पर भी बल देते हैं। आधुनिक समय में शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य रोजगार परकता है, जिसके कारण विद्यार्थी सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों को नज़रअंदाज़ करने लगते हैं। अरविन्द का मत है कि शिक्षा व्यक्ति में समाज–सेवा की भावना, उत्तरदायित्व–बोध और वैश्विक भाईचारे की चेतना जागृत करे। शिक्षा का उद्देश्य केवल "व्यक्तिगत सफलता" न होकर "सामाजिक कल्याण" होना चाहिए। यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक मानवीय और सामूहिक भलाई से जोड़ता है।

चौथे, अरविन्द ने शिक्षा में योग और ध्यान को आवश्यक बताया। आधुनिक समय की शिक्षा व्यवस्था में जहाँ तनाव, प्रतिस्पर्धा और मानसिक दबाव लगातार बढ़ रहा है, वहाँ योग और ध्यान विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी हो सकते हैं। शोध से भी यह सिद्ध हो चुका है कि योग और ध्यान से न केवल एकाग्रता और आत्म–नियंत्रण बढ़ता है, बल्कि मानसिक शांति और सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित होता है। अरविन्द का मत था कि शिक्षा में योग और ध्यान को शामिल करने से विद्यार्थी आत्मिक शांति प्राप्त कर सकते हैं और जीवन के उच्च आदर्शों की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

पाँचवें, अरविन्द का दर्शन नैतिक शिक्षा पर विशेष बल देता है। आधुनिक शिक्षा में नैतिकता और मूल्य–शिक्षा का स्थान धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। विद्यार्थी ज्ञान और तकनीकी कौशल तो प्राप्त कर लेते हैं, परंतु उनके भीतर उत्तरदायित्व, सहिष्णुता और करुणा की भावना विकसित नहीं हो पाती। अरविन्द के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मूल्यनिष्ठ नागरिक तैयार करना है, जो न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सफल हो, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो।

हालाँकि, यह भी स्वीकार करना होगा कि अरविन्द के विचारों को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में व्यापक स्तर पर लागू करना आसान नहीं है। आज की परीक्षा–केंद्रित प्रणाली, व्यावसायिक दबाव और संसाधनों की कमी इसके मार्ग में बड़ी चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। शिक्षा संस्थानों पर रोजगार और परिणाम देने का इतना अधिक दबाव है कि वे योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा और आत्म–खोज जैसी गतिविधियों को महत्त्व नहीं दे पाते। इसके अलावा, शिक्षा का व्यवसायीकरण भी इस दिशा में बड़ी बाधा है, क्योंकि निजी शिक्षा संस्थान लाभ और प्रतिस्पर्धा पर अधिक ध्यान देते हैं।

फिर भी, छोटे स्तर पर हुए प्रयोग यह सिद्ध करते हैं कि अरविन्द की शिक्षा दृष्टि को व्यवहारिक रूप से लागू किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, पांडिचेरी का श्री अरविन्द इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन और ऑरोविले जैसे वैकल्पिक विद्यालय अरविन्द के विचारों के आधार पर संचालित हो रहे हैं। इन संस्थानों में विद्यार्थियों को स्वतंत्र वातावरण, रचनात्मक गतिविधियों में भागीदारी, योग और ध्यान का अभ्यास तथा आत्म–खोज के अवसर दिए जाते हैं। यहाँ विद्यार्थियों का विकास केवल बौद्धिक ही नहीं बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से भी होता है। इन प्रयोगों की सफलता यह प्रमाणित करती है कि यदि इच्छाशक्ति और उचित दृष्टिकोण हो, तो अरविन्द का दर्शन आधुनिक शिक्षा में भी व्यवहारिक और प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

अतः चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि अरविन्द का शैक्षिक दर्शन शिक्षा को केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित रखने वाली संकीर्ण परिभाषा से बाहर निकालकर उसे मानवीय, मूल्यनिष्ठ और आध्यात्मिक

दिशा प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों को आत्म–साक्षात्कार की ओर ले जाता है और उन्हें ऐसे नागरिक के रूप में तैयार करता है जो न केवल अपने जीवन को सार्थक बनाएँ बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण में भी योगदान दें। यद्यपि इसे व्यापक स्तर पर लागू करने में चुनौतियाँ अवश्य हैं, परंतु यदि शिक्षा नीतियों और पद्धतियों में सुधार कर इसे अपनाया जाए तो यह शिक्षा को उसके वास्तविक उद्देश्य–मानव का संपूर्ण विकास और समाज का कल्याण–की ओर अग्रसर कर सकती है।

निष्कर्ष

महर्षि अरविन्द का शैक्षिक दर्शन आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक और आवश्यक है, जितना उनके युग में था। शिक्षा को उन्होंने केवल ज्ञानार्जन और रोजगार प्राप्ति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आत्मा में स्थित दिव्य शक्तियों के जागरण, आत्म–साक्षात्कार और सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का साधन माना। उनका यह दृष्टिकोण आज की शिक्षा प्रणाली को नई दिशा प्रदान कर सकता है, क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रायः परीक्षा, अंक और नौकरी तक सीमित होकर रह गई है। ऐसी स्थिति में अरविन्द का दर्शन शिक्षा को केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण से ऊपर उठाकर मानवीय और आध्यात्मिक आधार देता है।

इस शोध से यह स्पष्ट हुआ कि अरविन्द की पंचमुखी शिक्षा–शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक–मनुष्य के सर्वांगीण विकास की सशक्त आधारशिला है। यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन पाँचों पक्षों का संतुलित समावेश हो, तो विद्यार्थी न केवल ज्ञानवान और दक्ष बनेंगे, बल्कि चरित्रवान, उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिक भी सिद्ध होंगे। यह शिक्षा उन्हें केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित न रखकर समाज और राष्ट्र के विकास की दिशा में प्रेरित करेगी।

योग और ध्यान का समावेश विद्यार्थियों को मानसिक शांति, एकाग्रता और आत्म–नियंत्रण प्रदान कर सकता है। आज की शिक्षा व्यवस्था में जहाँ तनाव, अवसाद और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, वहाँ यह उपाय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को संतुलित और सकारात्मक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इसी प्रकार, नैतिक मूल्यों और रचनात्मक गतिविधियों का समावेश विद्यार्थियों के भीतर सहिष्णुता, करुणा, सहयोग और सामाजिक समरसता की भावना का विकास करेगा। यह मूल्य–आधारित शिक्षा समाज में शांति, न्याय और समन्वय की स्थापना करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रचनात्मकता, समग्रता और मूल्य शिक्षा पर बल दिया गया है, जो यह दर्शाता है कि अरविन्द के विचार आज भी शिक्षा सुधारों के लिए प्रेरणा बने हुए हैं। यह नीति अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, अरविन्द की शिक्षा दृष्टि की प्रासंगिकता और आवश्यकता को स्वीकार करती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अरविन्द की शिक्षा विचारधारा केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक और नीतिगत महत्व भी रखती है।

हालाँकि, यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि अरविन्द के विचारों को व्यापक स्तर पर लागू करने में चुनौतियाँ हैं। परीक्षा–केंद्रित प्रणाली, व्यावसायिक दबाव और शिक्षा का व्यवसायीकरण उनके सिद्धांतों के क्रियान्वयन में बड़ी बाधाएँ प्रस्तुत करते हैं। फिर भी, पांडिचेरी का श्री अरविन्द इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन और ऑरोविले जैसे शिक्षा–केंद्र इस बात के प्रमाण हैं कि छोटे स्तर पर इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाना संभव है। इनके सकारात्मक परिणाम इस तथ्य को सिद्ध करते हैं कि यदि शिक्षा प्रणाली इच्छाशक्ति और उचित दिशा के साथ आगे बढ़े, तो अरविन्द की शिक्षा दृष्टि को आधुनिक युग में सफलतापूर्वक अपनाया जा सकता है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में योग, ध्यान, नैतिक मूल्यों और रचनात्मक गतिविधियों को सम्मिलित किया जाए, तो शिक्षा केवल रोजगार और परीक्षा का साधन न रहकर आत्म–साक्षात्कार, व्यक्तित्व विकास और समाज निर्माण का प्रभावी माध्यम बन सकती है। महर्षि अरविन्द की शिक्षा दृष्टि शिक्षा को उसकी मूल आत्मा से जोड़ती है और इसे मानवता के उच्चतम आदर्शों की प्राप्ति का मार्ग बनाती है। यही कारण है कि उनका शैक्षिक दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था, और भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए भी एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरविन्द घोष, द लाइफ डिवाइन, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, 1947।
2. अरविन्द घोष, एजुकेशन, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, 1920।
3. मिश्र, रामेश्वर प्रसाद, भारतीय शिक्षाशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998।
4. शर्मा, आर.एस., भारतीय दर्शन और शिक्षा, अटलांटिक पब्लिशर्स, दिल्ली, 2002।
5. देसाई, एन.के., श्री अरविन्द का दर्शन, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, 2001।
6. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
7. पाण्डेय, रमेश, समग्र शिक्षा और योगदर्शन, भारतीय शिक्षा पत्रिका, खंड 36(3), 2010।
8. शर्मा, के.के., भारतीय शिक्षा के आदर्श और मूल्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005।
9. मुखर्जी, सत्येन्द्र नाथ, आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन, अटलांटिक पब्लिशर्स, दिल्ली, 2007।
10. सिंह, गोविंद, भारतीय शिक्षा और मानव विकास, पुस्तकलोक प्रकाशन, वाराणसी, 2015।

❑❑❑